IV paper

चम्पा के सामाजिक जीवन

Social life of champa.

Ans: चम्पा का सामाजिक जीवन वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था। भारत से जो उपनिवेश चम्पा गए थे वे अपने साथ वर्ण व्यवस्था को भी चम्पा ले गए थे। इन उपनिवेशकों मुख्यतः ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ण के लोग थे। ब्राह्मण और क्षत्रिय का समाज में ऊँचा स्थान था। इन दोनों वर्णों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध का उल्लेख हमें कई लेखों में मिलता है। समाज का स्तर ऊँचा था। व्यापारी लोग भी धन सम्पत्ति के कारण अपना प्रतिष्ठा बनाए हुए थे। सम्भवतः व्यापारी लोग भारत से उपनिवेशक के रूप में व्यापार करते आए थे। शूद्र लोग भी भारत से आकर बसे हों, यह कहना कठिन है पर चम्पा के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वहाँ दास और दासियों की संख्या बहुत अधिक थी। राजा या अन्य धनवान सम्पतिवान व्यक्ति गण मन्दिर के लिए सम्पत्ति दान करते थे तो साथ में बहुत से दास-दासियों को भी दान करते थे। ये दास या शूद्र स्थानीय थे। ये भारत के उपनिवेशक नहीं थे। सम्भवतः ये युद्ध में परास्त हुए लोग रहते थे।

ब्राह्मण तथा क्षत्रिय एक दूसरे के बहुत निकट थे। सम्भवतः उनमें वैवाहिक सम्बन्ध हो जाता था। 657 ई० के माइसोन अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजकीय कुटुम्बों में रुद्रवर्मन का पिता एक प्रसिद्ध ब्राह्मण था तथा उसकी माता मनोरथ वर्मन (क्षत्रिय) की कन्या थी। इसलिए रुद्रदामन को ब्राह्मण क्षत्रिय कुल तिलक कहा गया है। इस प्रकार का अनेक सम्बन्ध अभिलेखों से ज्ञात होता है। जयवर्मन सतम की दोनों रानियां ब्राह्मण थी। ✓

ब्राह्मण तथा क्षत्रिय को समाज में उत्तम स्थान प्राप्त था। ब्राह्मण की हत्या को घोर पाप माना जाता था। इससे स्पष्ट है कि ब्राह्मणों को समाज में अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

रहन-सहन तथा वेशभूषा: ब्राह्मण और क्षत्रियों द्वारा चम्पा के निवासियों में उच्च वर्ग का निर्माण होता था। एक अभिलेख से इस वर्ग के वेश-भूषा तथा रहन-

Scanned with CamScanner

सदन पर प्रकाश पड़ता है। ~~एक अभिलेख से रथवर्मा के वेष- भूषा तथा रहन~~ राजा भद्रवर्मा का एक उच्च पदाधिकारी आशा महा सामन्त था। वह शीर्ष पर माला धारण करता था। मस्तक स्वयं उत्तम- तिलक लगाता था। उसके कान पूरे- पूरे आभूषणों से ढके होते थे। उसके कमर में सोने की करधनी पड़ी होती थी। सुनहरी मियान में तलवार रहता था। मोर के पंखों से बना छत्र वह धारण करता था। उसके शरीर पर दो वस्त्र होते थे। वह रेशमी- पालकी में बैठकर चलता था जिसके डण्डे चांदी के बने होते थे। जब कहीं वह आता- जाता था- तो बाजा बजाने वाले सैनिक साथ आते- जाते थे। अभिलेख से चम्पा के राजपदाधिकारियों की वेष- भूषा तथा रहन- सहन का स्पष्ट चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाता है।

11 वीं शताब्दी में एक राजदूत चीन आया था उसके विवरण से भी रहन- सहन एवं वेष- भूषा की जानकारी प्राप्त होती है। केवल राजा- ही नहीं अपितु अन्य वर्ग के लोग भी सिर पर मुकुट पहना करते थे। जब अन्य वर्ग के लोग अपने सर को राजा के चरणों में झुकाते थे तो मुकुट में लगे मणियों के किरणों से राजा को चरणों में झुकाते थे तो मुकुट में लगे मणियों के किरणों से- राजा के चरण जगमगा उठते थे। शरीर पर सुगन्ध, चन्दन आदि- लगाने की प्रथा भी चम्पा में विद्यमान थी।

चम्पा के मन्दिरों में जो विविध चित्रावलियां उत्कीर्ण है, उनसे भी- वहाँ के लोगों की वेश- भूषा एवं वस्त्र पर प्रकाश पड़ता है। इनमें स्त्रियों और पुरुषों दोनों के शरीर के कटि से ऊपर के भाग को नंगा दिखाया गया है। चित्र में पुरुषों का अधोवस्त्र घुटने तक जाता है। स्त्री पुरुष दोनों ~~[illegible]~~ के अधोवस्त्र पेटी द्वारा कमर बंधे होते हैं। सम्पन्न परिवार के नरनारियों की ये पेटियां विविध प्रकार के रत्नों से अलंकृत की जाती थी। पुरुष जो अधो- पहनते थे, वह धोती के ढंग का होता था। चम्पा के कुछ चित्रों में पुरुष को दुपट्टा ओढ़े भी- दिखाया गया है तथा दासों को केवल लंगोटी-

Scanned with CamScanner

पहने हुए दिखाया गया है।

लोग प्रायः नंगे पैर रहते थे, यद्यपि सम्पन्न लोग जूतों का प्रयोग भी किया करते थे। जूते प्रायः कपड़े के बने होते थे। मन्दिरों के दिवारों भित्तियों पर के चित्रों में पुरुषों तथा स्त्रियों के केश सज्जा के ढंग को भी प्रदर्शित किया गया है। यह बहुत कलात्मक है। वे बालों को सावधानी से सवारकर उन्हें अनेक प्रकार के जूड़े में बांधा करते थे। उन्हें रत्नों एवं फूलों से सजाते थे। एक चीनी ग्रन्थ के अनुसार चम्पा में रंग बिरंगे वस्त्र पहनने का भी रिवाज पता चलता है। ऐसे वस्त्र केवल सम्पन्न व्यक्ति ही पहना करते थे।

कुटुम्ब विवाह तथा स्त्रियों का समाज में स्थान:

चम्पा के अभिलेखों से तत्कालीन वैवाहिक प्रथा तथा स्त्रियों के समाज में स्थान का पता चलता है। बौद्धन के लेख से सामूहिक कुटुम्ब प्रणाली का संकेत मिलता है। कुटुम्ब में केवल पैतृक रूप से ही अधिकार प्राप्त नहीं, पर मातृ सम्बन्धियों को भी सिंहासन पर बैठने का अधिकार था। रुद्रवर्मन के बाद उसके दो सत्यवर्मन और सिंहवर्मन सिंहासन पर बैठे। और इन्द्रवर्मन के बाद उसका बहनोई और भांजा गद्दी पर बैठा। इससे ज्ञात होता है कि स्त्रियों और बहिनों के वंशज भी गद्दी पर बैठ सकते थे।

वास्तव में पुरुषों का स्त्रियों पर पूर्णतः अधिकार था। बहु-विवाह प्रथा भी वर्जित नहीं। विवाह के सम्बन्ध में विशेष जानकारी चीनी स्रोतों से पता चलता है। विवाह में मध्यस्थ स्वर्ण, रजत और मणि लेकर कन्या के घर जाता था और फिर शुभ मुहूर्त में वर पक्ष वाले बाजों की ध्वनि करते हुए कन्या के यहाँ आते थे और मंत्रों के साथ पुरोहित उनका विवाह करा देता था। पति पत्नी के रूप में दोनों का सम्बन्ध प्रेम और कर्तव्य पर आधारित था। चम्पा के सम्राट प्रायः बहु विवाह करते थे जिसका कारण राजनीतिक कारण राजनीतिक मित्रता स्थापित करना था।

आमोद-प्रमोद: अन्य देश के समान चम्पा में भी लोगों के आमोद-प्रमोद के मुख्य साधन वादन-वादन

संगीत तथा नृत्य थे। मन्दिरों पर उत्कीर्ण चित्र से भी संगीत, नृत्य, कला के प्रति प्रेम की जानकारी प्राप्त होती है। अनेक नृत्य का चित्र मन्दिरों के भित्तियों पर उत्कीर्ण है। चम्पा के भग्नावशेषों में भी नर्तकी की एक मूर्ति प्राप्त हुई है। जो टूरेन के संग्रहालय में विद्यमान है। नर्तकी की यह मूर्ति अत्यन्त सुन्दर एवं कलात्मक है। यहाँ से प्राप्त एक अभिलेख में कुशल नर्तक तथा गायक का वर्णन है जो हरिवर्मन सभा को सुशोभित करते थे।

इनसे प्रतीत होता है कि नृत्य तथा वाद्य वादन विज्ञापन में पुरुष और स्त्रियां भाग लेती थी। पुरुष तथा स्त्रियों के मनोरंजन के अन्य साधनों में भारत की भांति त्योहार तथा पर्व भी मनाये जाते थे जो सम्वत् चैत से प्रारम्भ होता था। नव वर्ष के दिन एक हाथी नगर में छोड़ा जाता था। आषाढ़ में नावों की दौड़ होती थी। संभवतः वादन, गायन और नृत्य का कार्य मुख्यतः दास-दासियों द्वारा ही किया जाता था।

दैनिक जीवन: सामाजिक सम्बन्धि अन्य विषयों में भोजन, भोजन तथा दाह संस्कार पर भी कुछ लोग प्रकाश डालते हैं। चम्पा के आर्थिक जीवन का मुख्य आधार खेती थी। वहां मुख्यतः चावल की खेती होती थी और वही लोगों का मुख्य भोजन था। गेहूँ का उल्लेख चम्पा के किसी अभिलेख में ज्ञात नहीं होता है। सिंचाई के लिए नदियों पर बांध-बांधकर नहरें भी निकाली जाती थी। भोजन पकाने तथा खाने के लिए सोने-चांदी कांसे और तांबे का बर्तन प्रयोग में लाया जाता था। धूप से बचने के लिए छाते का भी प्रयोग होता था।

भारत की भांति चम्पा में भी शव का दाह संस्कार किया जाता था। और राख तथा हड्डियों नदी में बहा दिया जाता था। इस प्रकार चम्पा के सामाजिक जीवन उच्च स्तर था वहाँ के निवासियों की जीवन एक सामाजिक बंधन से बंधा था। चम्पा के लोग हर सामाजिक विधि-व्यवहारों से अवगत थे।